भारत की कृषि पद्धतियाँ एवं कृषि प्रदेश
(Agricultural Systems and Regions in India)

भारत में भौगोलिक विविधताओं के कारण कृषित फसलों में विभिन्नता होना स्वाभाविक है। यही नहीं, बल्कि यहाँ एक ही प्रकार की मिट्टी, जलवायु तथा अन्य भौगोलिक परिस्थितियों में समानता होने पर भी कई फसलों का संयोग मिलता है।

भारत में फसलों की मात्रा और सघनता पर जलवायु धरातल एवं ऐतिहासिक कारकों का सर्वाधिक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। कृषि की पद्धतियाँ भी भिन्न भिन्न हैं।

उपरोक्त कारणों से भारत में कृषि पद्धतियों का वर्गीकरण करना सहज नहीं है, तथापि व्हिटलसी द्वारा प्रयुक्त पाँच - स्तरीय आधारों का प्रयोग करते हुए भारतीय कृषि पद्धतियों का आनुभविक वर्गीकरण किया जा सकता है। इसके लिए निम्नलिखित आधारी तत्व चुने जा सकते हैं -

(i) फसल का प्रकार - जैसे कि खाद्यान्न (सूक्ष्म एवं मोटे) तिलहन, सब्जी उत्पादन फलोत्पादन औद्योगिक फसलें, पेय फसलें, चारा फसलें आदि
(ii) पशु पालन - मवेशी, बकरी, आदि
(iii) कृषि की तकनीक, उपकरण
(iv) श्रम - फार्म का विभिन्न संक्रियाओं हेतु।
(v) उत्पादन का उद्देश्य
(vi) कृषि उद्यम में पूंजी निवेश, तथा
(vii) उत्पादकता की स्तर।

उपरोक्त सूचकों के आधार पर भारत को निम्न विभागों में बांटा जा सकता है -

6:25 pm

1. आर्द्र प्रधान कृषि - यह कृषि मिजोरम एवं मणिपुर की पहाड़ियों, त्रिपुरा के मैदान, मेघालय पठार, असम की पहाड़ियों वाली, पश्चिमी बंगाल के मैदान बालासोर मैदान, महानदी डेल्टा तथा बेसिन, राँची - पठार, छत्तीसगढ़ मैदान, उड़ीसा के पूर्वी घाटों तथा आन्ध्र प्रदेश के उत्तरी तटीय मैदानों में प्रचलित है। सूक्ष्म अनाज (चावल तथा गेहूँ) की खेती कुल कृषित भूमि के 70% भाग पर होती है।

2. चावल प्रधान छोटे अन्न वाली कृषि - यह कृषि उत्तरी पूर्वी हिमान्चल, बिहार के मैदान, हजारीबाग पठार, बघेल खण्ड पठार, छत्तीसगढ़, बेसिन, सतपुड़ा श्रेणी के पूर्वी भाग, दण्डकारण्य, चान्दा के मैदान, गोदावरी बेसिन, आन्ध्र प्रदेश के पूर्वी घाटों, गोदावरी, कृष्णा डेल्टा, आन्ध्र प्रदेश के दक्षिणी तटीय मैदान तमिलनाडु के उत्तरी तटीय मैदान, कर्नाटक के तटीय मैदान, कोंकण मैदान तथा पश्चिमी घाट के पश्चिमी ढालों पर प्रचलित है। यहाँ 50% कृषित क्षेत्र पर सूक्ष्म अनाज तथा 22% क्षेत्र पर मोटे पर होती है। सकल बोये गये क्षेत्र का 28% (मध्यम) है।

3. नारियल, फलोत्पादन प्रधान, सूक्ष्म अन्नोत्पादन कृषि - यह केरल के दक्षिणी मैदान एवं दक्षिणी पहाड़ियों में मिलती है। यहाँ कुल कृषित भूमि के 24% भाग पर तिलहन, 20% पर फल 18% पर सूक्ष्म खाद्यान्न तथा 18% पर सब्जी उत्पादन होता है।

4. सूक्ष्म अनाज तथा पेय फसलों की प्रधानता एवं फलोत्पादन तथा नारियल कृषि - यह प्रदेश उत्तरी केरल की पहाड़ियों एवं मैदानों तथा पश्चिमी

घाटों के दक्षिणी भाग पर विस्तृत है। यहाँ सूक्ष्म प्रदेश उत्तरी केरल की पहाड़ियों एवं मैदानों तथा पश्चिमी घाटों के दक्षिणी भाग पर विस्तृत है। यहाँ सूक्ष्म अनाजों के अन्तर्गत 34% पेय फसलों के अन्तर्गत 19% फलों के अन्तर्गत 14% तथा तिलहनों के अन्तर्गत 12% कृषित क्षेत्र है।

5. सूक्ष्म एवं मोटे अनाज की कृषि - यह कृषि उत्तरांचल तथा उत्तर प्रदेश के मैदानी भागों में प्रचलित है। सकल बोये गये क्षेत्र के 42% भाग पर सूक्ष्म अन्न तथा 36% भाग पर मोटे अनाज उगाये जाते हैं। सिंचित क्षेत्र की सघनता मध्यम (39%) है।

6. सूक्ष्म एवं मोटे अनाजों की आधुनिकता की ओर अग्रसर कृषि - यह कृषि पंजाब तथा उत्तरी पूर्वी एवं पूर्वी हरियाणा में प्रचलित है। यहाँ सकल बोये गये क्षेत्र के 42% भाग पर सूक्ष्म अनाज तथा 36% भाग पर मोटे अनाज उगाये जाते हैं। यहाँ भैंसे प्रमुख मवेशी हैं।

7. मोटे एवं सूक्ष्म अनाजों की कृषि - यह कृषि दक्षिणी कश्मीर हिमालय, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा के दक्षिणी, पश्चिमी भागों, उत्तरी राजस्थान के बागड़ चम्बल बेसिन, अरावली श्रेणी, पूर्वी राजस्थान की उच्च भूमि, मालवा के पठार, बिण्ड - मुरैना के मैदान, विन्ध्य - स्कार्प भूमि, तथा सतपुड़ा श्रेणी के मध्यवर्ती क्षेत्रों में प्रचलित है। यहाँ 49% कृषित भूमि पर मोटे अनाज तथा 28% क्षेत्र पर सूक्ष्म अनाज उगाये जाते हैं।

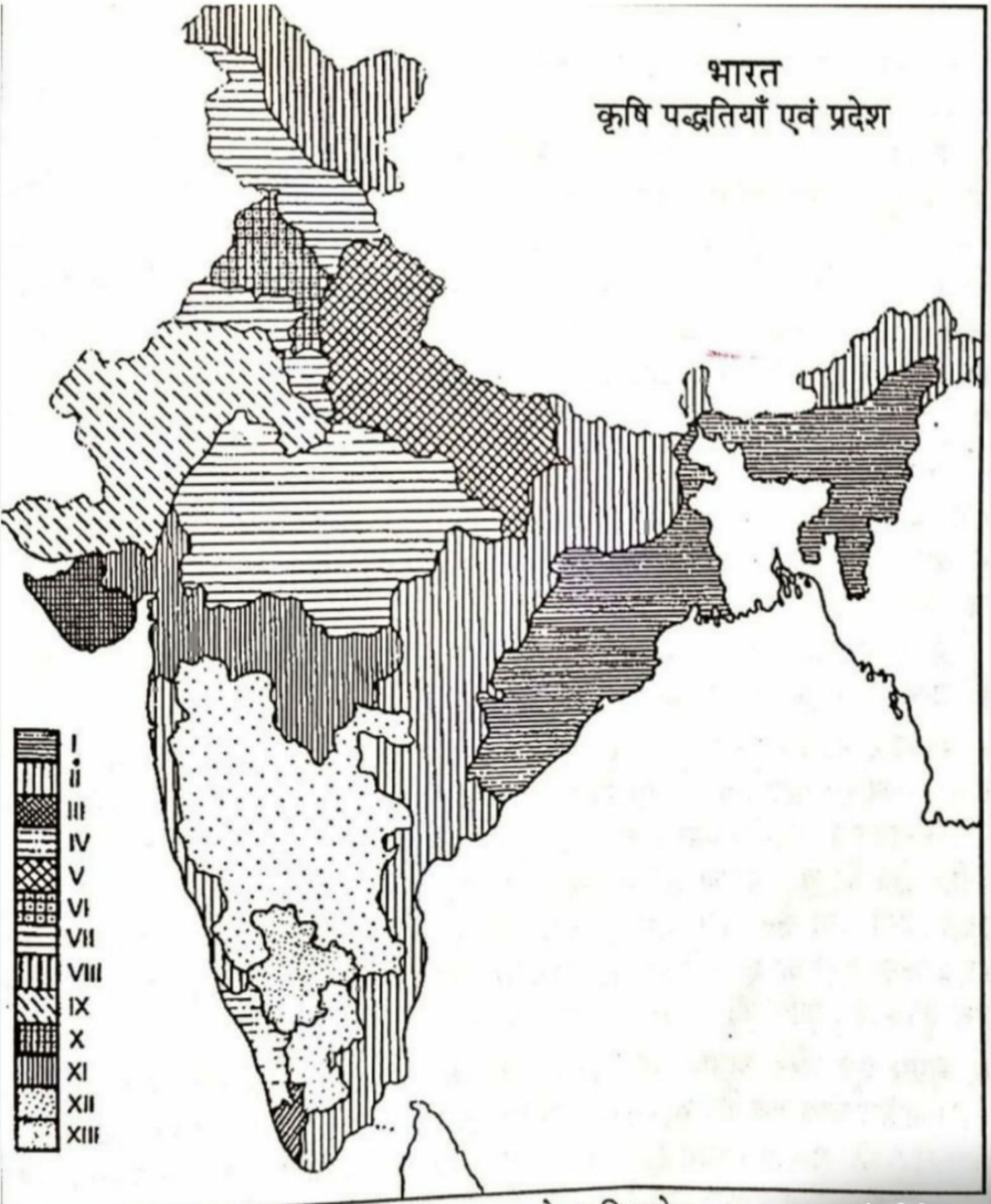

चित्र 14.8 : भारत के कृषि प्रदेश

6:25 pm

8. ग्रीष्म में गेहूँ के साथ ज्वार बाजरा प्रधान कृषि :- यह कृषि अरी कश्मीर हिमालय में प्रचलित है। यहाँ कुल बोये गये क्षेत्र के 76% भाग पर मोटे अनाज तथा 18% भाग पर सूक्ष्म अनाज उगाये जाते हैं। यहाँ मवेशी तथा भेड़ प्रधानतः पाली जाती है। सिंचित क्षेत्र बहुत कम (6%) है।

9. बाजरा प्रधान शुष्क कृषि :- यह कृषि राजस्थान की मरूस्थली, बागड़, कच्छ प्रायद्वीप तथा गुजरात से अरी मैदान में प्रचलित है। यहाँ मवेशी, ऊँट, भेड़-बकड़ी, एवं भैंस भी पाली जाती है। सिंचित क्षेत्र बहुत कम (6%) है तथा कुल बोया गया क्षेत्र भी बहुत कम (10%) है।

10. मूँगफली एवं मोटे अनाज की कृषि :- यह कृषि काठियावाड़ में प्रचलित है। तिलहन एवं मोटे अनाजों के अन्तर्गत क्रमशः 64% तथा 35% क्षेत्र है। मवेशियों में भैंसे प्रमुख है। सिंचित क्षेत्र (5%) है तथा सकल बोय गया क्षेत्र (10%) अत्यल्प है। श्रम का विनियोग मध्यम (35-50) तथा लकड़ी के हल (25) एवं लोहे के हल (3से कम) का प्रयोग कम है।

11. मोटे अनाज एवं कपास की कृषि - यह कृषि गुजरात के मैदान, ताप्ती बेसिन, नर्मदा घाटी, महाराष्ट्र के पूर्वी पठार, तथा सतपुड़ा श्रेणी के पश्चिमी भाग में प्रचलित है। यहाँ मोटे अनाजों तथा औद्योगिक फसलों के अन्तर्गत कृषित क्षेत्र क्रमशः 49% तथा 29% है। यहाँ मवेशी तथा भैंस मुख्यतः पाले जाते हैं।

6:25 pm

12. मोटे अनाजों की प्रधानता एवं मूँगफली तथा सूक्ष्म अनाज की कृषि :- यह कृषि पश्चिमी घाटों के पूर्वी ढालों, महाराष्ट्र के पश्चिमी पठार, कर्नाटक के निम्न पठारी भाग, तेलंगाना, एवं कावेरी बेसिन में प्रचलित है। यहाँ मोटे अनाज, तिलहन एवं सूक्ष्म अनाजों के अन्तर्गत क्रमशः 48%, 16% एवं 15% क्षेत्र पाया जाता है।

13. रानी प्रधान शुष्क कृषि - यह कृषि कर्नाटक के उच्च स्तर पर प्रचलित है। मोटे अनाज, सूक्ष्म अनाज तथा तिलहन क्रमशः 64%, 12% तथा 10% कृषिय क्षेत्र पर उगाये जाते हैं यहाँ मवेशी भैंस तथा भेड़-बकरी का संयोजन मिलता है।

6:25 pm